**शोध संक्षेपिका**

# "डॉ. शंकर शेष के समग्र साहित्य में स्त्री - पुरुष संबंध"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

में पी.एच.डी. (हिंदी) शोधोपाधि हेतू प्रस्तावित शोधप्रबंध का सार-संक्षेप


शोधछात्रा

**मनिषा मोहनराव डोंगरकर**

एम.ए.बी.एड., एम.फिल. (हिंदी)

शोध-निर्देशक

**डॉ. शेख हसीना बानो.म.**

अध्यक्ष हिंदी विभाग

नेताजी सुभासचंद्र बांस महाविद्यालय, नांदेड



नवंबर -२०११

# “डॉ. शंकर शेष के समग्र साहित्य में स्त्री - पुरुष संबंध”

## अनुक्रमणिका


प्राक्कथन -

प्रथम अध्याय : आधुनिक ‘हिंदी साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध’

व्दितीय अध्याय : डॉ. शंकर शेष व्यक्तित्व एवं कृतित्व

तृतीय अध्याय : डॉ. शंकर शेष के साहित्य में सामाजिक परिवेश

चतुर्थ अध्याय : डॉ. शंकर शेष के नाटकों मे स्त्री-पुरुष संबंध

पंचम अध्याय : डॉ. शंकर शेष के कथात्मक साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध

षष्ठम अध्याय : उपसंहार

## प्राक्कथन

साहित्य समाज का दपर्ण है | व्यक्ति-व्यक्ति से समाज बनता है | इस समाज के दो प्रमुख घटक स्त्री-पुरुष है | स्त्री-पुरुष संबंध के विविध रुप है | पिता पुत्री, भाई-बहन, देवर भाभी आदि किंतु स्त्री-पुरुष संबंध सामान्यतः काम संबंधो के अर्थ मे रुढ हो गया है | मैने अपने शोध में उक्त पदावली का प्रयोग उपर्युक्त अर्थ मे किया है | स्त्री-पुरुष की पारस्पारिक अनुशक्ति पुरुष संबंधो का मुलाधार कामाकर्षण प्रेम है | इस स्त्री-पुरुष संबंध को समाजमान्य और व्यवस्थित रुप विवाहव्दारा दिया जाता है |

आज स्त्री स्कूल, कॉलेज, नौकरी के लिए घर से बाहर निकलती है | उसका घर से बाहर निकलतेही अन्य पुरुषों से संबंध आता है | वह पुरुष के कंधेसे कंधा मिलाकर काम करती है | वह खुदके फैसले खुद कर सकती है किंतु, पुरुषप्रधान संस्कृती मे पुरुष उसे अबला समझकर कुचलने का प्रयास करते है |

स्नातकोत्तर अध्ययन के समय डॉ. शंकर शेष कें साहित्य को पढने का अवसर प्राप्त हुआ और मैने डॉ. शंकर शेष के नाटकों में 'स्त्री-पुरुष संबंध' स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड मानवविद्या संकल्प अंतर्गत एम.फिल उपाधि हेतु प्रस्तुत उपरोक्त लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत किया और एम.फिल. की उपाधि २०१०में प्राप्त किया और उसी विषय को आगे विस्तारित करने के विचार से पी.एच.डी. उपाधि हेतु 'डॉ. शंकर शेष के समग्र साहित्य मे स्त्री-पुरुष संबंध' विषय को लेकर शोध कार्य करने का निश्चय किया |

इस शोध कार्य कार्य के लिए निम्नरुप से अध्यायों मे विभाजित किया जाएगा |

**प्रथम अध्याय : आधुनिक 'हिंदी साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध'**

विकासात्मक अध्ययन का समावेश रहेगा | इसमें भारतेंदु युगोन हिंदी साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध व्दिवेदी युग के हिंदी साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध शुक्लयुग, शुक्लोतर युग, प्रेमचंद युग, प्रेमचंदोत्तर युग प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग तथा आधुनिक युग कें हिंदी साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध विकासात्मक अध्ययन किया जायेगा |

**व्दितीय अध्याय : डॉ. शंकर शेष व्यक्तित्व एवं कृतित्व**

डॉ. शंकर शेष प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे | शेष कुशाग्र बुध्दि, उदार ह्दय मानवीय संवेदना तथा चेतना के धनी थे | डॉ. शंकर शेष नाटककार उपन्यासकार, अनुसंधाता एवं पटकथा लेखक के रुप में जाने पहचाने जाते है| डॉ. शंकर शेष का जन्म २ अक्तुबर १९३३ में विलासपूर मे सामंतशाही महाराष्ट्रीय ब्राम्हण परिवार में हुआ | इनके पिताजी का नाम श्री नागोराव शेष तथा माताजी का नाम श्रीमती सावित्री देवी था | शेष परिवार विलासपून के सामंत परिवारों मे से बक होने के कारण ऐश्वर्य तथा सुखसंपन्न परिवार था | डाँ. शेष ने नागपूर विश्वविद्यालय से बी.ए. ऑनर्स की उपाधि प्रथम श्रेणी मे सन १९५६ मे हासिल की |उसी कॉलेज मे उन्हे अधिव्याख्याता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ |

**कृतित्व :** डॉ. शंकर शेष ने सन १९५५ से लेकर १९८१ तक की साहित्य यात्रा मे बाईस नाटक, सात एकांकी नाटक दो बाल नाटक, चार अनुदित नाटक, चार उपन्यास, तीन अनुसंधानात्कक प्रबंध, एक संकीर्ण, दोन पटकथा, एक पटकथा-संवाद,आदि लिखकर हिंदी साहित्यजगत को नई दिशा प्रदान की है | डाँ. शंकर शेष की रचनाएँ कालक्रमानुसार इस प्रकार है |

**नाटक :**

| | |
|---|---|
| १. मुतिकार (१९५५) | २. रत्नगर्भा (१९५६) |
| ३. नई सभ्यता नए नमुने (१९५६) | ४. बेटोंवाला बाप (१९५८) |
| ५. तिल का ताड (१९५८) | ६. बिनबाती के दीप (१९६८) |

७. बाढ का पानी (१९६८)

८. बंधन अपने अपने (१९६९)

९. खजुराहो का शिल्पी (१९७)

१० फंदी (१९७१)

११. एक और द्रोणाचार्य (१९७१)

१२. कालजयाी (१९७३) (मराठी)

१३. कालजयी (१९७३)

१४. घरौंदा (१९७४)

१५. अरे मायावी सरोबर (१९७४)

१६. रक्तबीज (१९७६)

१७. राक्षस (१९७७)

१८. पोस्टर (१९७७)

१९. चेहरे (१९७८)

२०. त्रिकोण का चौथा कोण (१९७९)

२१. कोमलगौंधार (१९७९)

२२. आधारीत के बाद (१९८१)

**एकांकी नाटक :**

१. विवाह मंडप (१९५७)

२. हिंदी का भृत (१९५८)

३. त्रिभूज का चौथा कोण (१९७१)

४. एक प्याला कॉपी (१९७९)

५. अजायव घर (१९८१)

६. पुलिपा

७. सोपकेस

**बालनाटक :**

१. दर्द का इलाज (१९७३)

२. मिठाई की चोरी

**अनुदित नाटक :**

१. दूर के दीप (१९५९)

२. एक और गांव (१९७२)

३. चल मेरे कद्दु ठुम्मक ठूम (१९७३)

४. पंचतंत्र (१९८१)

**उपन्यास :**

१. तेंदु के पत्ते (१९५६)　　　　　　２. चेतना (१९७१)

३. खजुराहो की अलका

४. धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रे (१९८०) भिष्म की आत्मकथा (अपुर्ण)

**अनुसंधात्मक निबंध :**

१. हिंदी और मराठी कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन (१९६१)

२. छत्तीसगढी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन.

३. आदिम जाती शब्द संग्रह एवं भाषा शास्त्रीय अध्ययन (१९५७)

**संकीर्ण :**

१. समृध्द की और

पटकथा : १. घरौंदा (१९७९)　　२. दूरियॉ (१९७९)

पटकथा संवाद : 　सोलहवॉ सावन

**तृतीय अध्याय : डॉ. शंकर शेष के साहित्य में सामाजिक परिवेश का विवेचन**

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद स्त्री-पुरुष संबंधो में क्रांतीकारी परिवर्तन आऐ है | पश्चिमी सभता के संपर्क ने उन्मुक्तता एवं व्यभिचारी वृत्ती को परिपोषित किया है | विवाह संबंधी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही थी | विवाह के पीछे हो रहे षडयंत्र के कारण तलाक की समस्या बढ रही है| बीसवी शताब्दी मे सौंदर्य केवल शरीर तक सीमित रहा है | मन के सौंदर्य तक नही पहुँच पाता |

**चतुर्थ अध्याय : डॉ. शंकर शेष के नाटकों मे स्त्री-पुरुष संबंध का विवेचन होगा**

स्त्री पुरुष के मध्य एक प्राकृतिक आकर्षण है, जो इन दोनों को एक दुसरे की ओर

आकृष्ट करता है| एक अदृश्य शक्ति इन दोनों को एस दुसरे की और खिंचती रहती है | यदि यह आकर्षण समाप्त होता है तो जीवन निरस तथा आकर्षणहीन लगने लगता है |

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद स्त्री-पुरुष संबंधो मे क्रांतीकारी परिवर्तन आए है | पश्चिमी सभ्यता के संपर्क मे उन्मक्तता एवं व्यभिचारी वृति को परिपोषित किया है | स्त्री-पुरुष संबंधी का प्रमुख कारण प्रेम है | स्त्री-पुरुष संबंधो का आधार काम भावना है और यह प्रयोजन का सिध्द करती है |

डॉ. शंकर शेष के मूर्तिकार, रत्नगर्भा, नई सभ्यता नए नमुने, बिन बातो के दीप, बाढ का पानी, बंधन अपने-अपने, खुरुराहो का शिल्पी, फंदी, एक और द्रोणाचार्य, कालजयी, घरौंदा अरे मायावी सरोवर , चेहरे, कोमल गॉधार, त्रिकोण का चौथा कोण.

**एकांकी नाटक :** विवाह मंडप, त्रिभूज का चौथा कोण, एक प्याला कॉफी, अजाय बहार,

**अनुदित नाटक :** दूर के दीप, एक और गांव, चल मेरे कद्दू ठूम्मक ठूम.

**पंचम अध्याय : डॉ. शंकर शेष के कथात्मक साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध**

उपन्यास : चेतना, खजुराहो की अलका

पटकथा : घरौंदा, दुरियाँ

पटकथा संवाद : सोलहवाँ सावन, आदि रचनाकें स्त्री-पुरुष संबंधो का अध्ययन होगा |

**षष्ठम अध्याय : उपसंहार**

इस अध्याय में उपरोक्त सभी अध्यायोंका सार विवेचन एवं निष्कर्ष दिया जाएगा | प्रथम अध्यायमे आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध का अध्ययन किया जाएगा | व्दितीय अध्याय में डॉ. शंकर शेष के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया जाएगा | तृतीय अध्याय में सामाजिक परिवेश का विवेचन किया जाएगा | चतुर्थ अध्याय में डॉ. शंकर शेष के नाटकों मे स्त्री-पुरुष संबंध का अध्ययन किया जाएगा | पंचम अध्याय मे डॉ. शंकर शेष के कथात्मक साहित्य मे स्त्री-पुरुष संबंध का विवेचन किया जाएगा |

**संदर्भ सूची :**


१. हिंदी नाटक उद्‌भव और विकास - डॉ. दशरथ ओझा

२. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नागेंद्र

३. भारतेंदु ग्रंथावली - प्रथम भाग

४. आधूनिक साहित्य - नंददुलारे वाजपेयी

५. मुर्तिकार - डॉ. शंकर शेष

६. कोमलगाँधार - डॉ. शंकर शेष

७. खजुराहो की अलका - डॉ. शंकर शेष

८. चेतना -डॉ. शंकर शेष



डॉ. शेख हसीना बानो.म.

अध्यक्ष हिंदी विभाग

नेताजी सुभासचंद्र बांस महाविद्यालय, नांदेड